

VI. बाह्य अर्थव्यवस्था

भारत की भुगतान संतुलन स्थिति वर्ष 2007-08 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में सुखद बनी रही, भले ही इस अवधि में निर्यातों में थोड़ी गिरावट आयी और गैर तेल-आयातों में बढ़ोतरी हुई। वणिक निर्यात में अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान वृद्धि की गति बनी रही, हालाँकि अप्रैल-नवंबर 2006 के दौरान हुई वृद्धि की तुलना में इसमें थोड़ी नरमी देखी गयी। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान आयातों में उच्च वृद्धि दर दर्ज की गयी; तथापि, तेल के आयात में पिछले वर्ष की इसी अवधि में रिकार्ड की गयी मजबूत वृद्धि की तुलना में तेज गिरावट देखी गयी। निजी अंतरणों में उच्च वृद्धि के चलते वर्ष 2007-08 की पहली छमाही के दौरान निवल अदृश्य अधिशेष उत्साहवर्द्धक बना रहा तथा उसने व्यापार घाटे के अधिकतर हिस्से की भरपाई की। अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान चालू घाटा अप्रैल-सितंबर 2006 की तुलना में थोड़ा अधिक हुआ। निवल पूँजी अंतर्वाह वर्ष 2006-07 की इसी अवधि की तुलना में काफी अधिक हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि में वर्ष 2007-08 के दौरान 85.7 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई (18 जनवरी 2008 तक)।

अंतरराष्ट्रीय गतिविधियाँ

वैश्विक आर्थिक कार्यकलाप वर्ष 2007 में सुदृढ़ बने रहे, हालाँकि वर्ष 2006 की बहुत उत्साहजनक स्थिति की तुलना में इनमें थोड़ी नरमी आयी। उभरते बाजारों में मजबूत आर्थिक स्थिति से संपुष्ट होकर वैश्विक अर्थव्यवस्था वर्ष 2007 की दूसरी तिमाही में थोड़ी वृद्धि दिखाने के बाद तीसरी तिमाही में बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ी (सारणी 47)।

सारणी 47 : वृद्धि दरें - वैश्विक परिदृश्य

देश	2005	2006	2007पी	2008पी	(प्रतिशत)						
					2006				2007		
					ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2	ति.3
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
विकसित अर्थव्यवस्था											
यूरो क्षेत्र	1.5	2.8	2.5	2.1	2.2	2.7	2.8	3.3	3.0	2.5	2.7
जापान	1.9	2.2	2.0	1.7	3.0	2.1	1.6	2.2	2.6	1.6	1.9
कोरिया	4.2	5.0	4.8	4.6	6.3	5.1	4.6	4.0	4.0	5.0	5.2
यूके	1.8	2.8	3.1	2.3	2.4	2.7	2.9	3.0	3.0	3.1	3.2
अमरीका	3.1	2.9	1.9	1.9	3.3	3.2	2.4	2.6	1.5	1.9	2.8
ओईसीडी देश	2.5	2.9	2.7	2.7	3.2	3.3	2.8	3.1	2.6	2.5	2.9
उभरती अर्थव्यवस्थाएं											
अर्जेंटीना	9.2	8.5	7.5	5.5	8.6	7.9	8.7	8.6	8.0	8.7	8.7
ब्राजील	2.9	3.7	4.4	4.0	3.9	1.1	3.2	4.4	4.3	5.4	5.7
चीन	10.4	11.1	11.5	10.0	10.3	10.9	10.7	10.7	11.1	11.5	11.5
भारत	9.0	9.4	8.9	8.4	10.0	9.6	10.2	8.7	9.1	9.3	8.9
इंडोनेशिया	5.7	5.5	6.2	6.1	5.0	5.0	5.5	6.1	6.0	6.3	6.5
मलेशिया	5.2	5.9	5.8	5.6	6.0	6.1	6.0	5.7	5.3	5.7	6.7
थाईलैंड	4.5	5.0	4.0	4.5	6.1	5.0	4.5	4.3	4.3	4.4	5.1

पी : आइएमएफ अनुमान।

टिप्पणी : कॉलम 2 और 3 के भारत के आंकड़े क्रमशः राजकोषीय वर्ष 2005-06 और 2006-07 से संबंधित हैं।

स्रोत : अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष; द इकोनॉमिस्ट और ओईसीडी।

जहाँ तक विकसित अर्थव्यवस्थाओं का संबंध है, अमेरिका में महत्वपूर्ण आर्थिक दबाव देखा गया, जो निरंतर आवास बाजार सुधार के कारण और उससे सहबद्ध वित्तीय बाजार की उथल-पुथल के कारण हुआ था। तथापि, अग्रिम रूप में जारी आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर वास्तविक जीडीपी वृद्धि 0.4 प्रतिशत अंक हुई और यह बढ़कर वर्ष 2007 की तीसरी तिमाही में 2.8 प्रतिशत हो गयी, जिसका मुख्य कारण था निर्यात में तेजी, वैयक्तिक उपभोग व्यय (पीसीई) में वृद्धि और निजी इन्वेंट्री निवेश में तेजी, जिसका आंशिक समायोजन आयातों में वृद्धि, रिहाइशी अचल निवेशों में काफी कमी और गैर रिहाइशी संरचनाओं में कमी के चलते हुआ। जापान में आर्थिक कार्यकलापों का उबरना वर्ष 2007 में जारी रहा, जिसका समर्थन घरेलू मांग और निर्यातों में तेजी द्वारा किया गया था। जापानी अर्थव्यवस्था में तीसरी तिमाही में वास्तविक जीडीपी में

वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 0.3 प्रतिशत अंक की वृद्धि देखी गयी, जिसका कारण था देश और विदेश में मांग में बढ़ोतरी होना। युनाइटेड किंगडम में, प्रारंभिक अनुमानों के अनुसार, वास्तविक जीडीपी वृद्धि वर्ष 2007 की तीसरी तिमाही के दौरान 3.2 प्रतिशत पर तगड़ी रही, जिसका मुख्य कारण था पक्का घरेलू उपभोग और अचल पूँजी निर्माण में वृद्धि होना। यूरो क्षेत्र में वर्ष 2007 की पहली छमाही में देखी गयी निरंतर आर्थिक वृद्धि तीसरी तिमाही तक बरकरार रही, जिसका कारण था वास्तविक प्रयोज्य आय में विकास के साथ उपभोग में वृद्धि, क्योंकि निरंतर रोजगार वृद्धि ने समर्थक स्थिति बनायी। इसके अलावा, निरंतर मजबूत बाह्य मांग ने यूरो क्षेत्र निर्यात और निवेश का समर्थन किया।

उभरते एशिया में आर्थिक कार्यकलाप समुत्थानशील बना रहा, खासकर इस क्षेत्र की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में।

विशेष रूप से चीन में अर्थव्यवस्था का विस्तार तेज गति से होता रहा और वर्ष 2007 की तीसरी तिमाही में इसकी वास्तविक जीडीपी 11.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ती रही।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक अक्टूबर 2007) द्वारा किये गये पूर्वानुमानों के अनुसार वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर वर्ष 2006 के 5.4 प्रतिशत की तुलना में नरम होकर वर्ष 2007 में 5.2 प्रतिशत और वर्ष 2008 में 4.8 प्रतिशत रह जाने की संभावना है (सारणी 48)। अमेरिका में गृह-निर्माण क्षेत्र में मंदी का संभावित प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था पर

कितना होगा, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है। तथापि, विश्व-अर्थव्यवस्था में थोड़े नरम स्वरूप की मंदी होने से, जैसाकि व्यापक रूप से भविष्यवाणी की जा रही है, इनकार नहीं किया जा सकता। तथापि, वैश्विक दृष्टिकोण के प्रति जोखिमों में कम होने की ओर उन्मुख हैं, जो इस चिंता के आसपास केंद्रित हैं कि वित्तीय बाजारों के तनाव और गहरायेगे तथा अधिक घोषित विश्व-मंदी को बढ़ायेगे। दृष्टिकोण के प्रति अतिरिक्त जोखिमों में शामिल हैं पण्य कीमतों में वृद्धि से उत्पन्न संभावित स्फीतिकारी दबाव और अस्थिर तेल बाजार तथा उभरते बाजारों में संभावित अधिक विदेशी मुद्रा अंतर्वाह का प्रभाव।

सारणी 48 : चुनिंदा आर्थिक संकेतक - विश्व

मंदा	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007पी	2008पी
1	2	3	4	5	6	7	8	9
I. वैश्विक उत्पादन (प्रतिशत परिवर्तन) #	2.5	3.1	4.0	5.3	4.8	5.4	5.2	4.8
	(1.5)	(1.9)	(2.6)	(3.9)	(3.3)	(3.8)	(3.5)	(3.3)
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	1.2	1.6	1.9	3.2	2.5	2.9	2.5	2.2
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	4.3	5.1	6.7	7.7	7.5	8.1	8.1	7.4
जिनमें से : विकासशील एशिया	6.0	7.0	8.3	8.8	9.2	9.8	9.8	8.8
II. उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (प्रतिशत)								
i) विकसित अर्थव्यवस्थाएं	2.1	1.5	1.8	2.0	2.3	2.3	2.1	2.0
ii) अन्य उभरते बाजार और विकासशील देश	6.5	5.7	5.7	5.4	5.2	5.1	5.9	5.3
जिनमें से : विकासशील एशिया	2.7	2.0	2.5	4.1	3.6	4.0	5.3	4.4
III. निवल पूंजी प्रवाह* (बिलियन अमरीकी डॉलर)								
i) निवल निजी पूंजी प्रवाह (क + ख + ग)**	80.6	90.1	168.3	239.4	271.1	220.9	495.4	291.3
क) निवल निजी प्रत्यक्ष निवेश	185.9	154.7	164.4	191.5	262.7	258.3	302.2	293.9
ख) निवल निजी संविभागीय निवेश	-79.8	-91.3	-11.7	21.1	23.3	-111.9	20.6	-93.1
ग) निवल अन्य निजी पूंजी प्रवाह	-25.8	26.0	14.5	25.1	-17.0	73.6	171.0	88.8
ii) निवल आधिकारिक प्रवाह	0.1	-2.7	-48.7	-67.2	-146.4	-165.8	-132.1	-141.2
IV. वैश्विक व्यापार @								
i) मात्रा	0.2	3.5	5.5	10.8	7.5	9.2	6.6	6.7
ii) मूल्य अपसफीति (अमरीकी डॉलर में)	-3.5	1.2	10.4	9.5	5.7	4.8	7.0	2.4
V. चालू खाता शेष (जीडीपी का प्रतिशत)								
i) अमरीका	-3.8	-4.4	-4.8	-5.5	-6.1	-6.2	-5.7	-5.5
ii) चीन	1.3	2.4	2.8	3.6	7.2	9.4	11.7	12.2
iii) मध्य - पूर्व	6.3	4.8	8.3	11.7	19.4	19.7	16.7	16.0

पी : आइएमएफ अनुमान

: वृद्धि दरें क्रय शक्ति समानता पर विनिमय दरों पर आधारित हैं। कोष्ठकों के आंकड़े बाजार विनिमय दरों पर वृद्धि दरें हैं। कृपया टिप्पणी भी देखें।

* : उभरते बाजार और विकासशील देशों की ओर निवल पूंजी प्रवाह।

** : आंकड़ों की परिमितता के कारण 'निवल निजी पूंजी प्रवाह' के अंतर्गत कतिपय शासकीय प्रवाह भी शामिल हो सकते हैं।

@ : सामान और सेवाओं के वैश्विक निर्यात और आयात के वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन का औसत।

टिप्पणी : अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने इंटरदेशनल कंपेरिजन प्रोग्राम (आइसीपी) द्वारा दिसंबर 2007 में प्रकाशित क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) की नई सांख्यिकीय गणना के आधार पर वैश्विक वृद्धि के अनुमान में 2002-07 के दौरान लगभग 0.5 प्रतिशत अंक की कमी की है।

स्रोत : वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, अक्टूबर 2007, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्वानुमानों के अनुसार, विश्व व्यापार में परिमाण में वृद्धि वर्ष 2007 में नरम होकर 6.6 प्रतिशत रहने की उम्मीद है, जबकि पूर्ववर्ती वर्ष में यह 9.2 प्रतिशत थी (देखें सारणी 48)। अन्य उभरते बाजारों और विकासशील देशों के निर्यातों के बारे में पूर्वानुमान है कि वे वर्ष 2007 में 9.2 प्रतिशत तक बढ़ेंगे (एक वर्ष पहले 11.0 प्रतिशत), जबकि विकसित देशों के निर्यात के बारे में उम्मीद है कि वे 5.4 प्रतिशत तक बढ़ेंगे (एक वर्ष पहले 8.2 प्रतिशत)।

विश्व-निर्यात (अमरीकी डालर में) में वर्ष 2007 के पहले नौ महीनों (जनवरी-सितंबर) में 13.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी (एक वर्ष पूर्व 14.6 प्रतिशत), जिसमें औद्योगिक देशों की वृद्धि 13.1 प्रतिशत (एक वर्ष पूर्व 10.9 प्रतिशत) थी। विकासशील देशों में निर्यात वृद्धि में नरमी आयी, जो जनवरी-अक्तूबर के दौरान 15.7 प्रतिशत थी, जबकि एक वर्ष पहले यह 19.2 प्रतिशत पर दर्ज की गयी थी। (सारणी 49)।

वणिक् व्यापार

वाणिज्यिक आसूचना और अंक संकलन महानिदेशालय (डीजीसीआइएंडएस) द्वारा जारी किये गये अनंतिम आँकड़ों के अनुसार भारत के वणिक् व्यापार में अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान 21.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी, जो वर्ष 2006-07 की तदनुकूल अवधि के दौरान 26.2 प्रतिशत वृद्धि से कम थी। आयातों में 26.9 प्रतिशत वृद्धि एक वर्ष पहले दर्ज की गयी 27.4 प्रतिशत की वृद्धि से सीमान्त रूप से कम थी (चार्ट 40)। गैर तेल आयातों में काफी वृद्धि दर्ज की गयी, जो 35.3 प्रतिशत पर पहुँच गयी (एक वर्ष पहले 21.3 प्रतिशत) और इसने समग्र आयात वृद्धि में लगभग 88 प्रतिशत का योगदान किया। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान तेल में आयात वृद्धि (9.8 प्रतिशत, जबकि अप्रैल-नवंबर 2006 में यह 42.0 प्रतिशत था) में काफी गिरावट आई। अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान वणिक् व्यापार घाटा कुल मिलाकर 52.8 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ, जो पिछले वर्ष (38.5 बिलियन अमरीकी डालर)

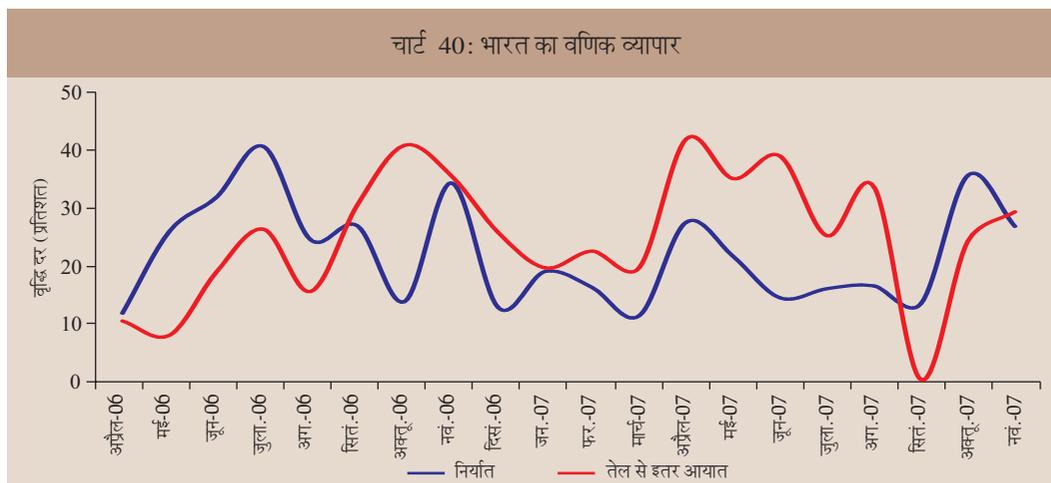
सारणी 49 : निर्यात में वृद्धि - वैश्विक परिदृश्य

क्षेत्र/देश	(प्रतिशत)			
	2005	2006	जनवरी-अक्तूबर	
			2006	2007
1	2	3	4	5
विश्व	14.0	15.6	14.6 *	13.8 *
औद्योगिक देश	8.5	12.6	10.9 *	13.1 *
अमरीका	10.8	14.5	14.8	11.9
फ्रांस	3.8	10.1	10.4	10.4
जर्मनी	7.3	15.1	11.0 *	18.9 *
जापान	5.2	9.2	8.1	8.9
विकासशील देश	22.0	19.5	19.2	15.7
गैर तेल उत्पादक विकासशील	19.3	19.9	19.6	17.1
चीन	28.4	27.2	26.8	26.5
भारत	29.9	21.3	22.1#	19.5#
इंडोनेशिया	22.9	19.0	19.1	14.2
कोरिया	12.0	14.4	14.6#	14.1#
मलेशिया	12.0	14.0	13.2	9.1
सिंगापुर	15.6	18.4	20.1	9.7
थाईलैंड	14.5	18.7	17.8	16.7

* : जनवरी-सितंबर

: जनवरी-नवंबर

स्रोत : अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सांख्यिकी, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, भारत के लिए डीजीसीआइ एंड एस।



की तुलना में 14.3 बिलियन अमरीकी डालर अधिक था।

अप्रैल-सितंबर 2007 के लिए उपलब्ध पण्यवार आँकड़े यह दर्शाते हैं कि पेट्रोलियम उत्पाद, इंजीनियरी सामान और रत्न एवं आभूषण निर्यात वृद्धि के वाहक बने रहे, जो एक साथ मिलकर समग्र निर्यात वृद्धि का लगभग 67 प्रतिशत होते हैं। रत्नों और आभूषणों के

अपवादके साथ, जिसने वृद्धि दर्ज की थी (21.2 प्रतिशत, जबकि अप्रैल-सितंबर 2006 में इसमें 1.0 प्रतिशत की गिरावट आयी थी) सभी प्रमुख पण्य समूहों ने गिरावट दर्ज की (सारणी 50)।

गंतव्य-स्थल वार अमेरिका भारत के निर्यात के लिए वर्ष 2007-08 के दौरान प्रमुख बाजार रहा, हालाँकि इसका हिस्सा, जो अप्रैल-सितंबर 2006 में 15.3 प्रतिशत

सारणी 50 : प्रमुख पण्यों का निर्यात

वस्तु समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घटबढ़ (प्रतिशत)		
	2006-07	2006-07	2007-08	2006-07	2006-07	2007-08
		अप्रैल-सितंबर			अप्रैल-सितंबर	
1	2	3	4	5	6	7
1. प्राथमिक उत्पाद	19.7	8.5	9.8	20.2	18.4	15.3
जिसमें से:						
क) कृषि एवं कृषिजन्य उत्पाद	12.7	5.6	6.4	24.2	24.0	15.1
ख) अयस्क और खनिज	7.0	2.9	3.4	13.6	8.8	15.7
2. विनिर्मित उत्पाद	84.9	40.9	46.7	17.0	18.3	14.1
जिसमें से:						
क) रसायन एवं संबद्ध उत्पाद	17.3	8.3	9.2	17.4	22.0	11.4
ख) इंजीनियरिंग वस्तुएं	29.6	14.0	16.9	36.1	37.8	20.8
ग) वस्त्र एवं वस्त्र उत्पाद	17.4	8.6	8.7	5.9	11.6	1.3
घ) रत्न एवं आभूषण	16.0	7.7	9.4	2.9	-1.0	21.2
3. पेट्रोलियम उत्पाद	18.7	10.0	12.6	60.5	103.5	26.8
4. कुल निर्यात	126.4	61.1	71.9	22.6	27.3	17.6
जापान :						
तेल से इतर निर्यात	107.7	51.2	59.3	17.7	18.6	15.8

स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

था, वह घटकर अप्रैल-सितंबर 2007 में 13.7 प्रतिशत रह गया। अमेरिका के बाद यू.ई. (10.3 प्रतिशत), चीन (5.3 प्रतिशत), यू.के. (4.3 प्रतिशत) और सिंगापुर (4.2 प्रतिशत) का स्थान आता है। प्रमुख क्षेत्रों में भारत का युरोपीय संघ (ईयू) को निर्यात तेज वृद्धि दर्शाता है, जबकि उत्तर अमेरिका, ओपेक और विकासशील देशों को निर्यात में अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान नरमी देखी गयी (सारणी 51)।

आयात के संबंध में अप्रैल-सितंबर 2007 के लिए उपलब्ध पण्यवार ब्यौरे यह प्रकट करते हैं कि पूँजीगत वस्तुएँ और सोना तथा चाँदी गैर तेल आयात में वृद्धि के प्रमुख वाहक थे। पूँजीगत वस्तुओं के आयात में 26.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, जबकि सोना और चाँदी के आयात में अप्रैल-सितंबर 2006 में 71.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। सोने और चाँदी को घटाकर गैर-तेल आयात 28.2 प्रतिशत की तेज गति से बढ़ा (अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान 19.2 प्रतिशत)। इस अवधि के दौरान जबकि पूँजीगत वस्तुओं का हिस्सा और धातुमय अयस्कों एवं धातु कतरनों का हिस्सा आयात वृद्धि में कम रहा, सोना और चाँदी, कोयला, कोक और ब्रिकेट,

मोती, मूल्यवान और अर्ध मूल्यवान पत्थर, रसायन और लोहा तथा इस्पात का हिस्सा अधिक रहा (सारणी 52)।

स्रोतवार दृष्टि से देखा जाये, तो चीन अप्रैल-सितंबर 2007 में आयात का प्रमुख स्रोत रहा, जो कुल आयात के 11.2 प्रतिशत के लिए जवाबदेह था (तेल और गैर तेल आयात), जिसके बाद सऊदी अरब (7.2 प्रतिशत), अमेरिका (5.8 प्रतिशत), स्विट्जरलैंड (5.6 प्रतिशत), यू.ई. (5.5 प्रतिशत), ईरान (4.2 प्रतिशत), आस्ट्रेलिया (4.0 प्रतिशत) और जर्मनी (3.8 प्रतिशत) का स्थान है।

अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान व्यापार घाटा बढ़कर 52.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, जो एक वर्ष पहले की तदनुकूल अवधि (38.5 बिलियन अमरीकी डालर) से 14.3 बिलियन अमरीकी डालर अधिक था (सारणी 53)। तेल के खाते में व्यापार घाटा अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान 2.3 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ा और 22.0 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुँच गया, जबकि गैर-तेल व्यापार घाटा 11.1 बिलियन अमरीकी डालर बढ़कर 17.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया।

सारणी 51 : भारत के निर्यात की दिशा

समूह/देश	बिलियन अमरीकी डॉलर			घटबढ़ (प्रतिशत)		
	2006-07	2006-07	2007-08	2006-07	2006-07	
					अप्रैल-सितंबर	
					2006-07	2007-08
1	2	3	4	5	6	7
1. ओईसीडी देश	52.0	25.0	28.3	13.5	16.1	13.3
जिसमें से:						
क) ईयू	25.8	12.2	14.6	15.1	16.8	19.7
ख) उत्तरी अमरीका	20.0	10.0	10.4	8.7	14.7	4.9
यूएस	18.9	9.4	9.9	8.7	14.7	5.0
2. ओपीईसी	20.7	10.4	12.5	35.8	55.8	19.7
जिसमें से:						
यू.ई.	12.0	6.2	7.4	40.0	65.2	19.7
3. विकासशील देश	49.9	24.5	29.3	25.5	30.6	19.7
जिसमें से:						
एशिया	36.7	18.2	21.0	18.5	24.7	15.2
पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना	8.3	3.4	3.8	22.7	18.8	9.8
सिंगापुर	6.1	3.5	3.0	11.9	30.1	-13.1
4. कुल निर्यात	126.4	61.1	71.9	22.6	27.3	17.6

स्रोत : वाणिज्यिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

सारणी 52 : प्रमुख वस्तुओं का आयात						
वस्तु समूह	बिलियन अमरीकी डॉलर			घटबढ़ (प्रतिशत)		
	2006-07	2006-07	2007-08	2006-07	2006-07	2007-08
		अप्रैल-सितंबर			अप्रैल-सितंबर	
1	2	3	4	5	6	7
पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पाद और संबंधित सामग्री	57.1	29.6	34.6	30.0	41.2	16.9
खाद्य तेल	2.1	1.0	1.4	4.2	-11.8	32.9
लोहा और इस्पात	6.4	2.9	4.4	40.5	16.9	52.8
पूंजीगत सामान	47.1	19.8	25.1	25.0	39.1	26.9
मोती, मल्यवान और अर्ध मूल्यवान रत्न	7.5	3.6	4.7	-18.0	32.8	30.6
रसायन	7.8	3.9	4.7	12.1	9.5	21.4
सोना और चांदी	14.6	6.7	11.5	29.4	-3.1	71.0
कुल आयात	185.7	87.4	111.6	24.5	23.5	27.7
<i>जापान :</i>						
तेल से इतर आयात	128.6	57.8	77.0	22.2	16.1	33.2
सोने और चांदी को छोड़कर तेल से इतर आयात	114.0	51.1	65.5	21.4	19.2	28.2
मुख्यतः औद्योगिक आयात*	104.7	47.2	60.1	19.6	19.5	27.4

* : सोना और चांदी, थोक उपभोक्ता माल, विनिर्मित उर्वरक और विशेषज्ञों के काम आने वाले उपकरणों की राशि को घटाकर तेल से इतर वस्तुओं के आयात।
स्रोत : वार्षिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

चालू खाता

अदृश्य मदों (सेवाओं, अंतरणों और आय को एक साथ लेते हुए) के अंतर्गत निवल अधिशेष अप्रैल-सितंबर 2007 में 31.7 बिलियन अमरीकी डॉलर पर ऊंचा था (अप्रैल-सितंबर 2006 में 23.4 बिलियन अमरीकी डॉलर), जो मुख्यतः समुद्रपार भारतीयों द्वारा

किये गये विप्रेषणों में वृद्धि, आरक्षित निधियों पर ऊंची ब्याज आय और कारोबारी सेवाओं के भुगतान में थोड़ी वृद्धि को प्रतिबिंबित करता है (सारणी 54)। अदृश्य प्राप्तियों और अदृश्य भुगतानों में वृद्धि में अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान गिरावट आयी, जिसका मुख्य कारण था सॉफ्टवेयर और कारोबारी सेवाओं के निर्यात में गिरावट

सारणी 53 : भारत का वणििक माल व्यापार				
(बिलियन अमरीकी डॉलर)				
मद	2005-06	2006-07	2006-07	2007-08
			अप्रैल-नवंबर	
1	2	3	4	5
निर्यात	103.1	126.4	80.6	98.3
आयात	149.2	185.7	119.1	151.1
तेल	44.0	57.1	39.4	43.3
तेल से इतर	105.2	128.6	79.7	107.8
व्यापार संतुलन	-46.1	-59.4	-38.5	-52.8
तेल से इतर वस्तुओं का व्यापार संतुलन	-13.8	-20.9	-11.9	..
घटबढ़ (प्रतिशत)				
निर्यात	23.4	22.6	26.2	21.9
आयात	33.8	24.5	27.4	26.9
तेल	47.3	30.0	42.0	9.8
तेल से इतर	28.8	22.2	21.3	35.3

.. : अनुपलब्ध.
स्रोत : वार्षिक आसूचना एवं अंक संकलन महानिदेशालय।

वार्षिक नीति समीक्षा

समष्टि आर्थिक और
मौद्रिक गतिविधियां
तीसरी तिमाही की
समीक्षा - 2007-08

सारणी 54 : अदृश्य खाते (निवल)

(बिलियन अमरीकी डॉलर)

मद	2006-07 आंसं	2006-07 आंसं			2007-2008		
	अप्रैल- मार्च	अप्रैल- जून	जुलाई- सितं.	अप्रैल- सितं.	अप्रैल- जून आंसं	जुलाई- सितं. (प्रा)	अप्रैल- सितं.(प्रा)
1	2	3	4	5	6	7	8
सेवाएं	31.810	7.579	6,918	14,497	8,029	6,660	14,689
यात्रा	2,438	220	-16	204	207	169	376
परिवहन	-18	-282	32	-250	-639	-675	-1,314
बीमा	560	109	161	270	232	81	313
सरकारी, अन्यत्र शामिल न की गई	-153	-39	-61	-100	-16	-62	-78
सॉफ्टवेयर	29,033	6,624	6,716	13,340	7,884	7,213	15,097
अन्य सेवाएं	-50	947	86	1,033	361	-66	295
अंतरण	28,168	6,873	5,385	12,258	8,327	10,116	18,443
निवेश आय	-6,018	-1,367	-1,668	-3,035	-801	-440	-1,241
कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	-555	-133	-153	-286	-62	-141	-203
कुल	53,405	12,952	10,482	23,434	15,493	16,195	31,688

आंसं : आंशिक संशोधन।

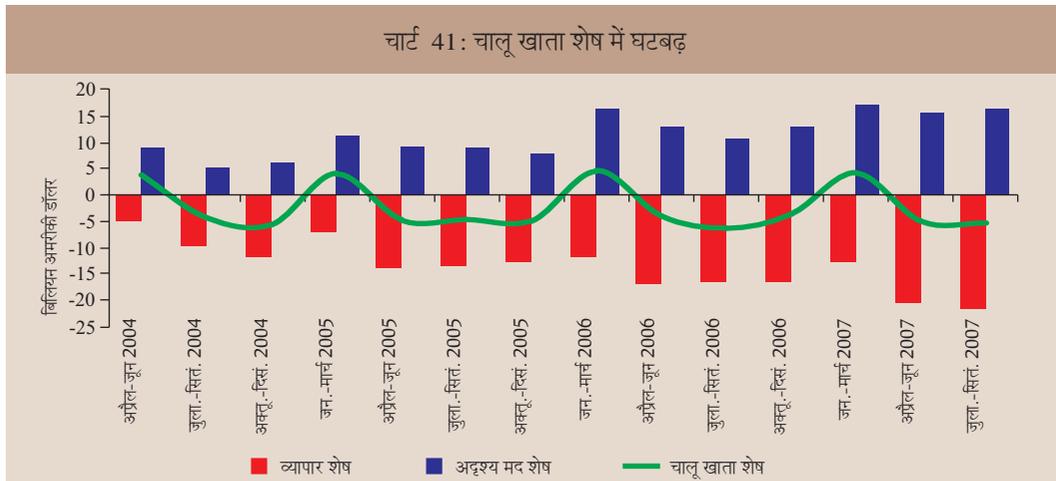
प्रा : प्रारंभिक।

आना। अदृश्य भुगतानों के प्रमुख अवयव थे, यात्रा संबंधी भुगतान, परिवहन, कारोबारी सेवाओं का भुगतान, यथा, कारोबार एवं प्रबंधन परामर्श, इंजीनियरी और अन्य तकनीकी सेवाएँ, तथा लाभांश और लाभ के भुगतान।

निवल अदृश्य अधिशेष ने व्यापार घाटे के एक बड़े हिस्से का समायोजन किया (अप्रैल-सितंबर 2007 के बीच 74.7 प्रतिशत, जबकि अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान यह 69.4 प्रतिशत था)। वणिज्य व्यापार घाटा

बड़ा होने के बावजूद उच्चतर निवल अदृश्य अधिशेष, जो मुख्यतः निजी अंतरणों के चलते हुए, ने चालू खाता घाटा को वर्ष 2007-08 की पहली छमाही में 10.7 बिलियन अमरीकी डालर पर थाम लिया (अप्रैल-सितंबर 2006 में 10.3 बिलियन अमरीकी डालर) (चार्ट 41 और सारणी 55)। विप्रेषणों को घटाकर, चालू खाता घाटा अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान 29.1 बिलियन अमरीकी डालर था (एक वर्ष पहले 22.6 बिलियन अमरीकी डालर)।

चार्ट 41: चालू खाता शेष में घटबढ़



सारणी 55 : भारत का भुगतान संतुलन							
(बिलियन अमरीकी डॉलर)							
मद	2006-07 आंसं	2006-07 आंसं			2007-2008		
	अप्रैल- मार्च	अप्रैल- जून	जुलाई- सितं.	अप्रैल- सितं.	अप्रैल- जून आंसं	जुलाई- सितं. प्रा	अप्रैल- सितं. प्रा
1	2	3	4	5	6	7	8
निर्यात	128,083	29,614	31,836	61,450	35,790	37,875	73,665
आयात	191,254	46,631	48,593	95,224	56,480	59,586	116,066
व्यापार संतुलन	-63,171	-17,017	-16,757	-33,774	-20,690	-21,711	-42,401
	(-6.9)						
अदृश्य प्राप्तियां	115,074	24,946	24,953	49,899	29,379	32,213	61,592
अदृश्य भुगतान	61,669	11,994	14,471	26,465	13,886	16,018	29,904
अदृश्य, निवल	53,405	12,952	10,482	23,434	15,493	16,195	31,688
	(5.8)						
चालू खाता	-9,766	-4,065	-6,275	-10,340	-5,197	-5,516	-10,713
	(-1.1)						
पूँजी खाता (निवल)*	46,372	10,444	8,545	18,989	16,397	34,752	51,149
जिसमें से :							
विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	8,479	1,579	2,912	4,491	1,738	2,142	3,880
संविभाग निवेश	7,062	-506	2,150	1,644	7,458	10,876	18,334
बाह्य वाणिज्यिक उधार +	16,155	3,974	1,761	5,735	6,963	3,594	10,557
अत्यावधि व्यापार ऋण	6,612	1,182	2,683	3,865	2,153	3,558	5,711
बाह्य सहायता	1,767	49	337	386	276	453	729
अनिवासी भारतीय जमाराशि	4,321	1,302	908	2,210	-447@	369	-78
भंडार में परिवर्तन #	-36,606	-6,379	-2,270	-8,649	-11,200	-29,236	-40,436
ज्ञापन:							
चालू खाता, निजी अंतरणों को घटाकर	-37,707	-10,959	-11,646	-22,605	-13,537	-15,596	29,133
	(-4.1)						
प्रा : प्रारंभिक	आंसं. : आंशिक संशोधन						
* : चूक-भूल सहित	# : भुगतान संतुलन आधार पर (मूल्यांकन छोड़कर); (-) वृद्धि दर्शाता है।						
+ : मध्यावधि तथा दीर्घावधि उधार	@ : अप्रैल-जून 2007 की अनिवासी रुपया जमाराशि शामिल है।						
टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े जोड़ीपी का प्रतिशत हैं।							

पूँजी प्रवाह

वित्तीय वर्ष 2007-08 के दौरान (नवंबर 2007 तक), भारत में विदेशी निवेश के विविध अवयवों में वृद्धिशील अंतर्वाह रिकार्ड किया गया। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) के अंतर्गत अंतर्वाह अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान 13.8 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में यह 10.1 बिलियन अमरीकी डालर का हुआ था (सारणी 56)। भारत को एफडीआई के संबंध में स्रोतवार आँकड़ों से यह प्रकट हुआ कि अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान मॉरिशस एफडीआई का सबसे बड़ा स्रोत रहा, जिसके बाद सिंगापुर और अमेरिका का स्थान है।

विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा निवल अंतर्वाह चालू वित्तीय वर्ष में अब तक (11 जनवरी 2008 तक) कुल मिलाकर 26.8 बिलियन अमरीकी डालर के बराबर हुआ। सेबी के पास पंजीकृत एफआईआई की संख्या, जो अंत-मार्च 2007 में 997 थी, वह अंत-दिसंबर 2007 में बढ़कर 1,219 हो गयी। अमेरिकन डिपॉजिटरी रसीद (एडीआर)/ग्लोबल डिपॉजिटरी रसीद (जीडीआर) के कारण पूँजी अंतर्वाह अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान 5.7 बिलियन अमरीकी डालर के बराबर हुआ।

चालू वित्तीय वर्ष 2007-08 (अप्रैल-सितंबर) के दौरान बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) के अंतर्गत

सारणी 56 : पूंजी प्रवाह

(मिलियन अम. डॉलर)

मद	अवधि	2006-07	2007-08
1	2	3	4
भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	अप्रैल-नवंबर	10,113	13,783
विदेशी संस्थागत निवेशक (निवल)	अप्रैल-जनवरी *	2,491	26,807
एडीआर/जीडीआर	अप्रैल-नवंबर	1,850	5,674
बाह्य सहायता (निवल)	अप्रैल-सितंबर	386	729
बाह्य वाणिज्यिक उधार (निवल)			
(मध्यावधि और दीर्घावधि)	अप्रैल-सितंबर	5,735	10,557
अल्पावधि व्यापार ऋण (निवल)	अप्रैल-सितंबर	3,865	5,711
अनिवासी भारतीय जमा (निवल)	अप्रैल-नवंबर	2,971	-433

* : 11 जनवरी तक

टिप्पणी : इस सारणी में प्रस्तुत एफआइआइ संबंधी आंकड़े देश में अंतर्वाह दर्शाते हैं। वे एफआइआइ द्वारा स्टॉक एक्सचेंजों में निवल निवेश संबंधी आंकड़ों से भिन्न हो सकते हैं।

अंतर्वाह (निवल) 10.6 बिलियन अमरीकी डालर के बराबर हुआ। निवल अल्पावधि व्यापार ऋण (जिसमें 180 दिनों का निवल आपूर्तिकर्ता का ऋण शामिल है) अप्रैल-सितंबर 2007 में 5.7 बिलियन अमरीकी डालर था। कुल अल्पावधि व्यापार ऋण में से 180 दिनों तक का आपूर्तिकर्ता का ऋण अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान 1.9 बिलियन अमरीकी डालर था।

अनिवासी भारतीय (एनआरआइ) जमाराशियों में अप्रैल-नवंबर 2007 के दौरान 433 मिलियन अमरीकी डालर का निवल बहिर्वाह रिकार्ड किया गया। यद्यपि विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक) [एफसीएनआर(बी)] और अनिवासी सामान्य रुपया (एनआरओ) खाता योजनाओं के अंतर्गत अंतर्वाह हुए, फिर भी अनिवासी बाह्य रुपया खाता [एनआर(ई)आरए] जमा योजना के अंतर्गत बहिर्वाह हुए।

चालू खाता घाटा से निवल पूंजी प्रवाह काफी अधिक होने से समग्र भुगतान संतुलन में अप्रैल-सितंबर 2007 के दौरान 40.4 बिलियन अमरीकी डालर का अधिशेष रिकार्ड किया गया (अप्रैल-सितंबर 2006 के दौरान 8.6 बिलियन अमरीकी डालर)।

निवल पूंजी प्रवाह के चालू खाता वित्तपोषण आवश्यकता से काफी अधिक रहने की प्रतिक्रिया में भारत में ऐसे प्रवाह के संबंध में कार्रवाई करने के लिए बहुविध दृष्टिकोण अपनाया गया है। नीति संबंधी अनुक्रिया में, अन्य बातों के साथ-साथ, निवासियों के लिए पूंजी बहिर्वाह में उदारीकरण, अनिवासी जमाराशियों पर न्यूनतम परिपक्वताओं में बढ़ोतरी के साथ ब्याज दरों का विनियमन, बाह्य ऋणों की पूर्व चुकौती, तथा विनिमय दर उतार-चढ़ाव में अधिक लचीलापन शामिल किये गये। आरक्षित नकदी निधि अनुपात और खुला बाजार परिचालनों, जिसमें चलनिधि समायोजन सुविधा और बाजार स्थिरीकरण योजना शामिल हैं, के माध्यम से अवरुद्धता परिचालनों का उपयोग भी पूंजी प्रवाह का प्रबंध करने के लिए किया गया है।

प्रमुख ईएमई, यथा ब्राजील, चीन और रूस, का सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि इन सभी देशों के केंद्रीय बैंक विदेशी मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करते हैं। ये ईएमई अपने विदेशी मुद्रा मध्यवर्ती परिचालनों को या तो पूर्णतः या अंशतः अवरुद्ध कर देते हैं। मौद्रिक नीति के संबंध में विभिन्न प्रकार के लिखतों का उपयोग किया जाता है,

जिसमें आरक्षित निधि अपेक्षाओं में वृद्धि, बैंक ऋण पर प्रतिबंध और न्यून मुद्रास्फूर्ति तथा मूल्य स्थायित्व बनाये रखने के लिए डिजाइन की गयी अन्य पारंपरिक मौद्रिक नीति संबंधी लिखतें शामिल हैं। पूँजीगत लेखा के प्रबंधन के संबंध में विभिन्न देशों ने बहिर्वाह को बढ़ावा देने के लिए उपाय आरंभ किये हैं; कुछ मामलों में अंतर्वाह को भी प्रतिबंधित किया गया है।

विदेशी मुद्रा भंडार

18 जनवरी 2008 को भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 284.9 बिलियन अमरीकी डालर था, जो अंत-मार्च 2007 के स्तर से 85.7 बिलियन अमरीकी डालर अधिक है। विदेशी मुद्रा भंडार में बढ़ोतरी मुख्यतः विदेशी मुद्रा आस्तियों में वृद्धि के कारण हुई, जो अंत-मार्च 2007 के दौरान 191.9 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 18 जनवरी 2008 को 276.1 बिलियन अमरीकी डालर हो गयी (सारणी 57)।

चीन और रूस के बाद भारत उभरते बाजार वाली अर्थव्यवस्थाओं में विदेशी मुद्रा भंडार का तीसरा सबसे बड़ा स्टॉक रखने वाला देश है। हाल के वर्षों में भारत के

विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंध के प्रति समग्र दृष्टिकोण भुगतान संतुलन और “चलनिधि जोखिमों” के संघटन में परिवर्तन के साथ विभिन्न प्रकार के प्रवाह और अन्य अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है। इन कारकों को ध्यान में रखकर भारत का विदेशी मुद्रा भंडार सुखद स्तर पर बना हुआ है और इसकी वृद्धि दर, अर्थव्यवस्था में बाह्य क्षेत्र के हिस्से तथा जोखिम समायोजित पूँजी प्रवाह के आकार के साथ संगति रखती है।

बाह्य कर्ज

भारत का कुल बाह्य कर्ज अंत-सितंबर 2007 में 190.5 बिलियन अमरीकी डालर था, जो अंत-मार्च 2007 से 20.9 बिलियन अमरीकी डालर (12.3 प्रतिशत) की वृद्धि दर्शाता है (सारणी 58)। इस अवधि के दौरान बाह्य कर्ज में वृद्धि मुख्यतः उच्चतर बाह्य वाणिज्यिक उधारों और उसके बाद उच्चतर अल्पावधि व्यापार ऋण और एनआरआई जमाराशियों के कारण हुई। बकाया कर्ज में वृद्धि कुछ हद तक धनात्मक मूल्यन प्रभाव (लगभग 5 बिलियन अमरीकी डालर) के कारण हुई, जो अन्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में

सारणी 57 : विदेशी मुद्रा भंडार

(मिलियन अम. डॉलर)					
माह	स्वर्ण	एमडीआर	विदेशी मुद्रा आस्तियां	अंशुको में भंडार की स्थिति	कुल (2+3+4+5)
1	2	3	4	5	6
मार्च 1995	4,370	7	20,809	331	25,517
मार्च 2000	2,974	4	35,058	658	38,694
मार्च 2005	4,500	5	135,571	1,438	141,514
मार्च 2006	5,755	3	145,108	756	151,622
मार्च 2007	6,784	2	191,924	469	199,179
अप्रैल 2007	7,036	11	196,899	463	204,409
मई 2007	6,911	1	200,697	459	208,068
जून 2007	6,787	1	206,114	460	213,362
जुलाई 2007	6,887	12	219,753	455	227,107
अगस्त 2007	6,881	2	221,509	455	228,847
सितंबर 2007	7,367	2	239,955	438	247,762
अक्टूबर 2007	7,811	13	256,427	441	264,692
नवंबर 2007	8,357	3	264,725	435	273,520
दिसंबर 2007	8,328	3	266,553	432	275,316
जनवरी 2008*	8,328	3	276,134	433	284,898

* : 18 जनवरी 2008 को

सारणी 58 : भारत का विदेशी ऋण

(मिलियन अम. डॉलर)

मद	मार्च 1995 के अंत में	मार्च 2005 के अंत में	मार्च 2006 के अंत में	मार्च 2007 के अंत में	जून 2007 के अंत में	सितंबर 2007 के अंत में
1	2	3	4	5	6	7
1. बहुपक्षीय	28,542	31,744	32,620	35,337	36,058	37,067
2. द्विपक्षीय	20,270	17,034	15,761	16,062	15,841	16,659
3. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	4,300	0	0	0	0	0
4. व्यापार ऋण (1 वर्ष से अधिक)	6,629	5,022	5,450	7,083	7,747	8,505
5. बाह्य वाणिज्यिक उधार	12,991	26,405	26,415	41,722	47,729	51,770
6. अनिवासी भारतीय जमाराशि	12,383	32,743	36,282	41,240	42,603	43,643
7. रुपया ऋण	9,624	2,302	2,032	1,946	2,032	2,081
8. दीर्घावधि (1 से 7)	94,739	115,250	118,560	143,390	152,010	159,725
9. अल्पावधि	4,269	17,723	19,569	26,239	28,568	30,791
कुल (8+9)	99,008	132,973	138,129	169,629	180,578	190,516
<i>जापन :</i> (प्रतिशत)						
कुल ऋण / जीडीपी	30.8	18.6	17.3	17.9
अल्पावधि / कुल ऋण	4.3	13.3	14.2	15.5	15.8	16.2
अल्पावधि ऋण / भंडार	16.9	12.5	12.9	13.2	13.4	12.4
रियायती ऋण / कुल ऋण	45.3	30.9	28.6	23.3	21.9	21.4
भंडार / कुल ऋण	25.4	106.4	109.8	117.4	118.2	130.0
ऋण चुकौती अनुपात*	25.9	6.1	9.9	4.8	4.6	4.5

* : राजकोषीय वर्ष से संबंधित है .. : अनुपलब्ध

अमरीकी मुद्रा में मूल्यहास को प्रतिबिंबित करता है। लगभग 52.8 प्रतिशत बाह्य कर्ज स्टॉक अमरीकी डालर में मूल्यवर्गित था और शेष में भारतीय रुपया (17.6 प्रतिशत), जापानी येन (11.5 प्रतिशत), और एसडीआर (11.1 प्रतिशत) में मूल्यवर्गित था। अल्पावधि कर्ज की व्याप्ति को (i) 180 दिनों तक के आपूर्तिकर्ताके ऋण और (ii) विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) द्वारा अल्पावधि कर्ज लिखतों में निवेश को शामिल करते हुए और अधिक व्यापक बनाया गया, जिसकी शुरूआत मार्च 2005 में अंत हुई तिमाही से की गयी। इसके परिणामस्वरूप अंत-जून 2007 में अल्पावधि कर्जको संशोधित कर 13.0 बिलियन अमरीकी डालर (प्रारंभिक) से 28.6 बिलियन अमरीकी डालर किया गया। अंत-सितंबर 2007 में अल्पावधि कर्ज बढ़कर 30.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, जो

कुल बाह्य कर्ज का 16.2 प्रतिशत होता है। कर्ज धारणीयता संकेतकों में कुल कर्ज में अल्पावधि कर्ज का अनुपात अंत-मार्च 2007 और अंत-सितंबर 2007 के बीच बढ़ गया, जबकि आरक्षित निधियों में अल्पावधि कर्ज का अनुपात इसी अवधि में घट गया। विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियाँ अंत-सितंबर 2007 में बाह्य कर्ज के स्टॉक से अधिक बनी रहीं।

अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

भारत की निवल अंतरराष्ट्रीय देयताएँ अंत-मार्च 2007 और अंत-जून 2007 के बीच 15.5 बिलियन अमरीकी डालर तक बढ़ गयी, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय देयताओं में वृद्धि (31.6 बिलियन अमरीकी डालर) अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में वृद्धि (16.1 बिलियन अमरीकी डालर) से अधिक थी (सारणी 59)। जबकि देयताओं

सारणी 59 : भारत की अंतरराष्ट्रीय निवेश स्थिति

(मिलियन अम. डॉलर)					
मदें	मार्च 2004 सं.	मार्च 2005 आं.सं.	मार्च 2006 आं.सं.	मार्च 2007 आं.सं.	जून 2007 आं.सं.
1	2	3	4	5	6
क. आस्तियां	136.0	166.8	182.8	243.6	259.7
	(21.3)	(23.3)	(22.9)	(25.7)	..
1. प्रत्यक्ष निवेश	7.8	10.0	13.0	24.0	29.4
2. संविभाग निवेश	0.4	0.5	1.0	0.8	0.8
2.1 ईक्विटी प्रतिभूतियां	0.2	0.3	0.5	0.4	0.4
2.2 ऋण प्रतिभूतियां	0.2	0.2	0.5	0.4	0.4
3. अन्य निवेश	14.8	14.8	17.2	19.6	16.2
3.1 व्यापार उधार	0.5	1.1	-0.3	2.5	1.9
3.2 ऋण	1.7	1.9	2.6	2.6	2.0
3.3 मुद्रा तथा जमाराशियां	9.5	8.4	11.6	10.3	8.1
3.4 अन्य आस्तियां	3.1	3.4	3.3	4.2	4.2
4. आरक्षित आस्तियां	113.0	141.5	151.6	199.2	213.4
	(17.7)	(19.8)	(19.0)	(21.0)	..
ख. देयताएं	183.2	210.8	232.0	290.6	322.2
	(29.0)	(29.5)	(29.0)	(30.7)	..
1. प्रत्यक्ष निवेश	38.2	44.5	51.1	72.3	83.0
	(6.0)	(6.2)	(6.4)	(7.6)	..
2. संविभाग निवेश	43.7	56.0	64.6	79.2	93.5
	(6.9)	(7.8)	(8.1)	(8.4)	..
2.1 ईक्विटी प्रतिभूति	33.9	43.2	54.7	63.3	75.2
2.2 ऋण प्रतिभूति	9.8	12.8	9.9	15.9	18.3
3. अन्य निवेश	101.3	110.3	116.3	139.1	145.7
	(16.1)	(15.5)	(14.6)	(14.7)	..
3.1 व्यापार उधार	6.3	9.6	10.5	13.7	14.7
3.2 ऋण	61.9	65.9	67.9	82.2	86.0
3.3 मुद्रा तथा जमाराशियां	32.2	33.6	37.3	42.3	43.8
3.4 अन्य देयताएं	1.0	1.2	0.6	0.9	1.2
ग. निवल स्थिति (क-ख)	-47.2	-44.0	-49.2	-47.0	-62.5
	(-7.6)	(-6.2)	(-6.2)	(-5.0)	..

आ.सं. : आंशिक संशोधित. अ : अनंतिम. .. : अनुपलब्ध.

टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े जीडीपी के प्रतिशत हैं।

में वृद्धि मुख्यतः संविभाग निवेशों के अंतर्गत बड़े पूँजी अंतर्वाह, प्रत्यक्ष निवेश और बाह्य वाणिज्यिक ऋणों के कारण हुई, अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में वृद्धि अंत-मार्च 2007 और अंत-जून 2007 के बीच आरक्षित आस्तियों में 14.2 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि और उसके बाद विदेश में प्रत्यक्ष निवेश (5.4 बिलियन अमरीकी

डालर), के कारण हुई। अंतरराष्ट्रीय देयताओं ने अंत-मार्च 2007 के अपने स्तर से अंत-जून 2007 में प्रत्यक्ष और संविभाग निवेश में वृद्धि को प्रतिबिंबित किया। देयताओं का एक बड़ा भाग, यथा, प्रत्यक्ष एवं संविभाग निवेश, संचयी अंतर्वाह को प्रतिबिंबित करता है, जो ऐतिहासिक मूल्यों पर है।